डॉ. गोपाल राय
और
हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		–7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध-कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	–98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	–102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	–109

गोपाल राय : एक दृष्टि **डॉ. राजीव कुमार झा**—116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय**—121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ॰ गोपाल राय **डॉ. कल्याण कुमार झा** —133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय **डॉ. संत साह** —137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय **डॉ. साक्षी शालिनी** —140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय **डॉ. राकेश रंजन** —144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति **डॉ. सुशांत कुमार** —153
डॉ०. गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन **डॉ. संध्या पाण्डेय** —157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय **डॉ. चित्तरंजन कुमार** —163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन **सोनल** —170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय **अखिलेश कुमार** —176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय **डॉ. माधव कुमार** —180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय **डॉ. पल्लवी** —185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश **समीक्षा सुरभि** —188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ **डॉ. प्रीति कुमारी** —200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता **डॉ. इंदिरा कुमारी** —205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय **पल्लवी कुमारी** —211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना **डॉ. अंशु कुमारी** —216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय **विकास कुमार** —220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय **उषाकिरण खान** —225
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय — **भगवानदास मोरवाल** –227
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — **डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार (समीक्षा से साभार) — **डॉ. पूनम सिन्हा** –236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — **डॉ. पूनम सिन्हा** –243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **डॉ. सुनीता गुप्ता** –258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पूनम सिन्हा**, **डॉ. माधव कुमार** –263
अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **विनीता कुमारी** –268
प्रतिवेदन –271

मैला आँचल की आंचलिकता : डॉ० गोपाल राय

–डॉ० कल्याण कुमार झा

'मैला आँचल' की भूमिका में रेणु लिखते हैं–"यह है 'मैला आँचल', एक आंचलिक उपन्यास। कथांचल है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है।"[1] क्या यह 'आंचलिकता' एक रचनाकार का यादृच्छिक चुनाव था या आंचलिकता की यह प्रवृत्ति और दृष्टि स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों में है? आदर्श आजादी से पहले की मानसिकता है और यथार्थ स्वातंत्र्योत्तर समाज की नियति भी है, उसकी दिशा और पहचान भी। यह 'गोदान' और 'मैला आँचल' को निर्मित करने वाली दो दृष्टियों का ऐतिहासिक संदर्भ है। 'आंचलिकता' शब्द अंचल से बना हुआ है। एक विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक इकाई को अंचल कहा जाता है। इसलिए भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विलक्षणता आंचलिकता का मूल आधार है। इस अंचल की भौगोलिक विशिष्टता के बारे में कुछ इस तरह रेणु जी ने भूमिका में लिखा है–"......उसके एक तरफ नेपाल है दूसरी ओर पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है जब हम दक्षिण में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ खींच देते हैं। यह वह क्षेत्र है और उस क्षेत्र में से मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है।"[2]

प्रसिद्ध समालोचक डॉ० गोपाल राय आंचलिकता का संबंध 'कथा क्षेत्र का पिछड़ापन' एवं 'गाँव से उसका अनिवार्य संबंध' से जोड़ते हैं। परन्तु भारत मुख्यतः गाँवों का देश है, अतः आंचलिक उपन्यास की विभेदक पहचान बनाने से वे इनकार भी करते हैं। अपनी प्रसिद्ध आलोचना पुस्तक 'उपन्यास की पहचान- मैला आँचल', में आंचलिक उपन्यास की पहचान के कई आधारों की चर्चा करते हैं। वे लिखते हैं कि "एक पहचान उपन्यास में नायक की स्थिति से बनती है। उपन्यास ने नायक की अवधारणा महाकाव्य

और नाटक से ली थी। पर विकास की प्रक्रिया में नायक उपन्यास से धीरे धीरे निष्कासित होता गया और उसके स्थान पर सामान्य स्तर के पात्र केन्द्र में अवस्थित होते गए। रेणु हिन्दी के पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने उपन्यास से नायक को लगभग निष्कासित कर दिया और उसके स्थान पर पूरे गाँव को बिठा दिया। मैला आँचल की यह विशेषता आंचलिक उपन्यास की प्रमुख विशेषता के रूप में स्वीकार कर ली गई है।''[13] यद्यपि सर्वप्रथम समालोचक नलिन विलोचन शर्मा ने मेरीगंज को एक 'पात्र' के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान की थी। आलोचकों ने एक स्वर से मेरीगंज को मैला आँचल के नायक के रूप में स्वीकार किया है। डॉ० गोपाल राय 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' में लिखते हैं–''उपन्यास की कथा मेरीगंज से बाहर बहुत कम जाती है। मेरीगंज पूरे उपन्यास की कथा पर हावी रहता है। उपन्यासकार ने किसी पात्र को मेरीगंज से बड़ा नहीं बनने दिया है। अतः यह मानना असंगत नहीं है कि 'मैला आँचल' में मेरीगंज की कल्पना एक पात्र के रूप में की गई है। मेरीगंज ही 'मैला आँचल' का विषय है अतः उसकी प्रस्तुति उपन्यास के केन्द्रीय पात्र के रूप में उसे स्पष्ट एवं संपूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करते हुए की गई है।''[14]

विषय-वस्तु के आधार पर देखें तो आंचलिकता लोकजीवन की कथा है। डॉ० गोपाल राय यह मानते हैं कि वह जीवन जो शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति के आलोकवृत्त से बाहर है, वह आंचलिकता का आधार है। मुख्यधारा के हाशिए में पड़ा जो विराट जनजीवन है, आंचलिक उपन्यास का संबंध उस लोकजीवन से होता है। आंचलिकता के लिए यह अनिवार्य है कि विकास की प्रक्रिया से छूटा हुआ जो बड़ा समाज है, वही कथा का आधार बने। आंचलिकता एक ऐसी जीवन पद्धति है जो ज्ञान अथवा सिद्धांत से नहीं बल्कि अपने विश्वासों, संस्कारों और रीति-रिवाजों से संचालित होता है, उससे रस ग्रहण करता है और उन्हीं संस्कारों एवं रीति-रिवाजों के प्रकाश में अपने जीवन व मूल्यों को परिभाषित करता है। डॉ० राय अपनी अवधारणा को संपुष्ट करते हुए लिखते हैं कि–''वस्तुतः रेणु ने ही पहली बार बिहार के पूर्णिया जिले के एक बड़े गाँव मेरीगंज को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े अंचल का प्रतीक बनाकर पूरे अंचल को उसकी संपूर्णता में कलाकारोचित संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि पूरा उपन्यास मेरीगंज में केन्द्रित है। यदि कथा मेरीगंज से बाहर निकलती भी है तो उसी प्रकार जैसे सुबह गाँव से शहर

जानेवाला ग्रामीण शाम या रात होते-होते गाँव वापस लौट आता है।''[5] अतः आंचलिकता एक रचना दृष्टि है, जीवन के साक्षात्कार की विधि है तथा लोकजीवन की कथा भी है।

आंचलिकता जीवन को देखने की एक प्रामाणिक पद्धति है। यह पद्धति दृष्टि के स्तर पर भी है और शिल्प के स्तर पर भी। यह परिवेश के साथ एक हस्तक्षेपहीन रिश्ता है और इसलिए अधिक प्रमाणिक है। अनेक विद्वानों की यह धारणा है कि आंचलिकता एक शिल्प है। इसके साथ यह भी कि आंचलिकता एक निश्चित, परिभाषित, बंधी हुई भौगोलिक इकाई भी है अर्थात् रचना के स्तर पर शिल्प है और कथानक के परिवेश के स्तर पर एक भूगोल। शिल्प और भूगोल आंचलिकता की औसत अवधारणा के रूप में स्वीकृत है। परन्तु सावधानी एवं गंभीरता से देखने पर पता चलता है कि ये आंचलिकता की सतही अवधारणाएँ हैं। आंचलिकता मूलतः एक रचना दृष्टि है जो एक स्थानीय समाज को उसकी संपूर्ण गतिमयता, संस्कारों तथा परिस्थितियों के बिन्दु पर आलोकित करती है। प्रसिद्ध समलोचक रामदरश मिश्र 'मैला आँचल' के बारे में लिखते हैं कि-''हिन्दी में पहली बार किसी अंचल विशेष के उपेक्षित जीवन की समस्त छवि और कुरूपता, सीमा, विवशता और संभावना को इतनी मानवीय ममता और सूक्ष्मता से रूप दिया गया है। लेखक ने 'मैला आँचल' में अंचल विशेष की कथा ही नहीं कही है बल्कि अपनी सशक्त व्यंग्य-शैली से कथा को इस प्रकार से नियोजित किया है कि समस्त अंचल सजीव होने के साथ-साथ समस्त जीवन के सौन्दर्य-असौन्दर्य, सद्-असद् की ओर बड़ी ही सूक्ष्मता से संकेत करता है।''[6]

आंचलिकता मात्र एक शिल्प नहीं है बल्कि एक परिस्थिति है, एक दृष्टि है, जो जीवन को बगैर किसी पूर्वग्रह के देखने व समझने की कोशिश करती है। प्रेमचंद तक पूर्वग्रह मौजूद है। आंचलिकता एक पूर्वग्रह मुक्त, योजनाओं से मुक्त, लेखकीय हस्तक्षेप से मुक्त, समाज एवं जीवन को देखने-समझने और उसे रचनात्मक रूप देने वाली दृष्टि है। दृष्टि की यह नवीनता ही पुराने शिल्प को पर्याप्त करार देती है। जीवन के प्रति दृष्टि में वस्तुगत परिवर्तन हो जाए तो पुराना शिल्प कारगर नहीं हो पाता। शिल्प की नवीनता अनिवार्य है। इसके स्तर पर आंचलिकता अंचल विशेष के जीवन को उसकी पूरी प्रमाणिकता में प्रस्तुत करने की पद्धति है। इसलिए आंचलिक उपन्यास में रचनाकार भाषा का और जीवन स्थितियों का अनुवाद नहीं करता है। 'मैला आँचल' की भाषा के संदर्भ में डॉ० राय लिखते हैं कि-''मैला

आँचल में चित्रणीय जीवन के अनुरूप भाषिक [illegible] का जो प्रतिमान उपस्थित किया गया है जिसका अनुकरण प्रायः [illegible] के सभी उपन्यासों में यहाँ तक कि स्वयं रेणु के उपन्यासों में भी इसका अनुकरण [illegible] बनकर रह गया है।''

'हिन्दी के चर्चित उपन्यासकार' पुस्तक में डॉ० [illegible] लिखते हैं कि ''यह आश्चर्य की बात है किन्तु है सत्य, यह उपन्यास [illegible] एक गाँव, पूर्णिया जिले के मेरीगंज की कहानी है। यह गाँव [illegible] विकसित गाँव नहीं, बल्कि एक पिछड़ा अशिक्षित गाँव है।''[8] निष्कर्षतः [illegible] कहा जा सकता है कि डॉ० गोपाल राय के अनुसार 'मैला आँचल' [illegible] आंचलिकता एक नया मैकेनिज्म, एक नई दृष्टि व पद्धति है जिसमें आज [illegible] के बाद के सत्य और यथार्थ को जानने के और देखने की पर्याप्त शक्ति [illegible]

संदर्भ :

1. मैला आँचल, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, भूमिका
2. उपरिवत्, भूमिका
3. उपन्यास की पहचान-मैला आँचल, डॉ० गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन पृ. सं.-11-12
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, डॉ० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पृ. सं.-247
5. उपन्यास की पहचान-मैला आँचल, डॉ० गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन पृ. सं.-12
6. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन पृ.सं.-242
7. उपन्यास की पहचान-मैला आँचल, डॉ० गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन पृ. सं.-17
8. हिन्दी के चर्चित उपन्यासकार, डॉ० भगवतीचरण मिश्र, राजपाल प्रकाशन, पृ.सं.-185

एसोसिएट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय

मुजफ्फरपुर

□